वैश्वीकरण के दौर में महिलाओं की स्थिति

■ वन्दना श्रीवास्तव
शोधार्थीनी (राजनीति विज्ञान)
श्री मु0म0टा0पी0जी0 कालेज, बलिया

■ समीक्षा श्रीवास्तव (प्रवक्ता)
महाविद्यालय बांसडीह, बलिया

भूमिका

आज यदि महिलाओं की वर्तमान अवस्था को समझने का प्रयास किया जाय तो इसके लिये महिलाओं की वैश्विक प्रयासों का अध्ययन आवश्यक है। जिसके उदाहरण विश्व के अनेक देशों में मिलते हैं। जहाँ महिलाओं ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण हजारों वर्षों से अपनी दबी हुई आकांक्षाओं को फलीभूत करने के लिए संघर्ष और आन्दोलनों का सहारा लिया, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाय तो महिला आन्दोलनों का सूत्रपात सामान्यतया इंग्लैण्ड, अमेरिका और फ्रांस जैसे राष्ट्रों में हुआ है।

वैश्वीकरण के इस युग में महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए अपनी अन्तर्निहित क्षमता के बल पर आत्मविश्वास और साहस के साथ पुरूष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व को दिलाने का सफल प्रयास कर रही हैं, साथ ही बदलती सामाजिक परिस्थितियों के क्रम में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए कुछ न कुछ प्रयास प्रत्येक स्तर पर किया जा रहा है।

वैश्वीकरण एक बहुत ही जटिल आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया है। समाज वैज्ञानिकों की दृष्टि में वैश्वीकरण की प्रक्रिया समय और दूरी का राष्ट्र–राज्य से आगे संकुचन उत्पन्न करती है। वैश्वीकरण की वर्तमान धारणा का उदारीकरण और निजीकरण से अभिन्न सम्बन्ध है।

वैश्वीकरण का प्रभाव– वैश्वीकरण में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की ऊर्जा विद्यमान है, जो महिलाओं के लिए जोखिम भरा क्षेत्र है। इस प्रकार वैश्वीकरण एक दोधारी तलवार है जिस पर चलना महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण है। यदि अंश भर ध्यान विचलित हो जाय तो महिलाओं का सार्वभौमिक विकास उलझ कर रह जायेगा।

वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव– वर्तमान वैश्वीकरण में महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना स्थान बना लिया है। महिलाएं शासन, प्रशासन, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में अपनी भागीदारी बढ़ाने, उन्हें पुरूषों के समकक्ष लाने अथवा बराबरी के अवसर प्रदान करने के लिए अनेकानेक संवैधानिक तथा विधि द्वारा प्रदत्त प्रावधानों से अपने स्वयं के निर्णय, अधिकारों एवं योजनाओं के प्रति जागरूक हुई हैं और वैश्वीकरण के युग में महिलाओं को स्वयं की शक्ति के बारे में अधिक से अधिक जागृत किया, जिससे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक विकास में प्रर्वतक बन सकें।

वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव– वैश्वीकरण ने आज देश के प्रत्येक क्षेत्र को नाकारात्मक स्वरूप से प्रभावित किया है जिसमें महिलाओं की संख्या अत्यधिक है। वैश्वीकरण ने निजीकरण, वित्तीय पूँजी का वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, रोजगारों पर हमला, अर्न्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व व्यापार संगठन को तीव्र ऊर्जा से गति प्रदान की है।

महिलाओं को डर–डर कर अपना जीवन जीना पड़ता है चाहे वह बचपन में भ्रूण हत्या के रूप में हो या युवावस्था में सुरक्षा के रूप में हो, विवाह के बाद दहेज के रूप में या बच्चा न पैदा कर पाने की स्थिति में बाँझ होने का ताना सुनने के रूप में हो और बुढ़ापे में दर–दर की ठोकरें खाने के रूप में हों। अभी भी 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या मात्र 933 है, जिसमें ग्रामीण महिलाएं सबसे ज्यादा निरक्षर हैं। अशिक्षित होने के कारण ही महिलाएं गरीब, बेराजगार और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अधिक पीड़ित हैं। जिसमें अनु. जाति, अनु. जनजाति तथा दूरस्थ क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं में स्वास्थ्य संक्रमण और कुपोषण, एनीमिया, यौगिक संचरण से होने वाले रोगों का ज्यादा प्रभाव है। महिलाएं तीन प्रकार की सामाजिक प्रताड़ना का सामना अधिक रूप से कर रही हैं–

1. विकलांगता
2. निरक्षरता
3. असहाय एवं गरीबी है।

वैश्वीकरण की तीव्रता के कारण महिलाओं का अपहरण, दहेज प्रताड़ना, बलात्कार जैसे अपराधों की बढ़ोत्तरी हो रही है।

आज की नारी अधिक स्वतंत्र और जागरूक है शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण परिवार के अन्दर उसके निर्णयों को महत्व दिया जाने लगा है। सर्वाधिक महत्व तथ्य यह है कि महिलाएं अब धीरे–धीरे पितृसत्ता के आवरण से बाहर आ रही

हैं। इस वैश्विक अभियान का पहलू यह भी है कि जैसे–जैसे आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण का प्रसार हो रहा है वैसे–वैसे महिलाओं के लिए 'अस्मिता' की रक्षा करना कठिन होता जा रहा है एवं कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न और छेड़–छाड़ की घटनाएं सामान्य हो गई हैं। उच्चपदस्थ महिलाएं अधिकारी हो या असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को कम्प्यूटर एवं सूचना तकनीकी विकास के कारण, इण्टरनेट के जरिये अश्लील साईटें व चैटिंग के बढ़ते प्रचलन में महिला साइबर क्राइम (अपराध) को जन्म दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने उत्पादों की बिक्री के लिए नारी शरीर का नग्न प्रदर्शन कर रही हैं। निःसन्देह जहां वैश्वीकरण ने नारी मुक्ति को गति प्रदान की है और उपभोक्तावादी संस्कृति ने नारी को बन्धनों से मुक्त किया है वहीं वैश्वीकरण ने नारी से नारीपन छीन लिया है और स्थानीयता की संस्कृति का विनाश किया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री को उचित मार्ग दर्शन द्वारा चारित्रिक पतन से रोका जाय तथा कानूनों में पारदर्शिता एवं कठोरता से लागू कर घर, आफिस व सार्वजनिक स्थलों पर होने वाली हिंसा व उत्पीड़न को रोकने का सार्थक प्रयास किया जाय, जिससे इस वैश्विक युग में महिलाओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

सन्दर्भ

1. पाण्डेय, डॉ. रविप्रकाशः 'वैश्विक एवं समाज', शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005
2. अग्रवाल, उमेश चन्द्रः महिला अधिकारों के संरक्षण की नई दिशा।
3. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा।
4. इण्डिया टुडे, नवम्बर 2008.
5. कुरूक्षेत्र, मार्च 2009.